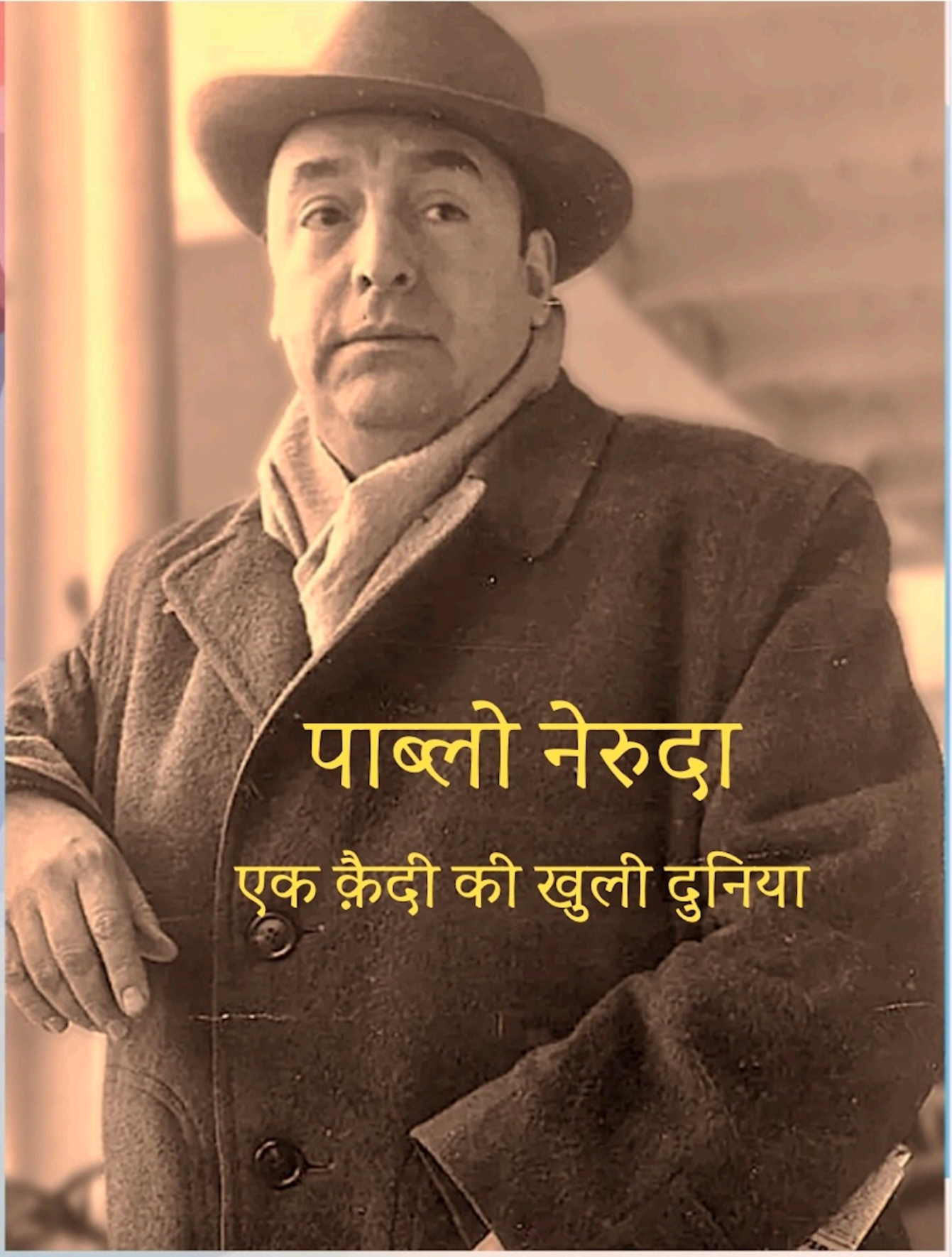

पाब्लो नेरुदा

एक क़ैदी की खुली दुनिया

अरुण माहेश्वरी

पाब्लो नेरुदा

एक क़ैदी की खुली दुनिया

अरुण माहेश्वरी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2024

© अरुण माहेश्वरी

श्री चंद्रबली सिंह

को जिनकी

"आत्मा के नियम इसकी अनुमति नहीं देते

कि सिक्कों पर या गणनागृहों में बिका जाये"

नेरुदा

अनुक्रम

प्राक्कथन	5
जन्मशती पर नेरुदा	9
गीला बचपन	15
कविता की राह पर	19
पूरब का विषाद	25
अतियथार्थवाद और जादुई यथार्थवाद की बहस	35
नेरुदा की रूह में बसा स्पेन	42
प्रेम का पुण्य कार्य	56
मेक्सिको और घर वापसी	64
मरुभूमि के कम्युनिस्ट सिनेटर	72
माच्चु पिच्चु के शिखर	79
भूमिगत जीवन	87
देश से निर्वासित विश्व नागरिक नेरुदा	95
नेरुदा की स्त्रियाँ	102
भारत में निरादृत	122
नए चीन में नेरुदा	135

सोवियत संघ और नेरुदा 141

यूरोप और नेरुदा 149

नेरूदा के सतरंगे अनुभव 156

कविता एक पेशा है 165

नेरुदा का साहित्य जगत 177

नोबेल पुरस्कार 185

आख़िरी वर्ष 194

अन्तिम समय 210

कवि की अन्तिम यात्रा 219

प्राक्कथन

यह वर्ष जुलाई 1904 में जन्मे पाब्लो नेरुदा का जन्म शताब्दी वर्ष है। इस मौके पर सारी दुनिया में नाना प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। चिली के 'फाउंडेशन पाब्लो नेरुदा', 'स्टैनफोर्ड सेंटर फॉर लैटिन अमेरिकन स्टडीज', चिली विश्वविद्यालय का मानविकी विभाग, पाब्लो नेरुदा जन्मशती पर गठित चिली के राष्ट्रपति के आयोग, सल्वादोर आइंदे की भतीजी और प्रसिद्ध उपन्यासकार इसाबेल आइंदे, चिली और उत्तरी अमेरिका के भी कई कलाकार और कवि मिलकर पाब्लो नेरुदा की जिन्दगी और उनके कार्यों पर एक डाक्यूमेंट्री बना रहे हैं और अंग्रेजी में उनकी सभी अनुदित रचनाओं का एक नया संकलन प्रकाशित करने में लगे हुए हैं। लाल पोस्ता की नदी, पृथ्वी, लाल शराब, घोड़ों की साँसों, तांबे की खदानों के मजदूरों के खुरदुरे हाथों, वर्षा और माच्चु पिच्चु की रजत चट्टानों के रंग से रंगी उनकी कविता के बहुरंगी संसार की तरह ही नेरुदा का अपना एक ऐसा गतिशील और आकर्षक व्यक्तित्व भी रहा है, जो नोबेल पुरस्कार प्राप्त कवि से कम विशाल नहीं है। वे कवि के साथ ही एक कूटनीतिज्ञ थे, फ्रांस के राजदूत, कम्युनिस्ट सिनेटर, चिली के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार, और लम्बे अर्से तक निर्वासित एक राजनीतिक शरणार्थी, और सचमुच एक विश्व-नागरिक भी थे। उन पर जितनी पाबन्दियां लगीं, उतना ही उनका निजी संसार विस्तृत होता चला गया। उन्हें जितना कैदखानों में रखने की कोशिश की गई, वे उतने ही ज्यादा आजाद रहें। उनकी दृढ़ वैचारिक प्रतिबद्धता ही उनके खुले और अदम्य मानवीय व्यवहार का आधार बनी। उनके मित्रों में पाब्लो पिकासो, आर्थर मिलर, लोर्का, नाजिम हिकमत से लेकर सड़कों के आम आदमी और सभी लघु और

तिरस्कृत मानी जाने वाली चीजें शामिल थीं।

वे जनता के कवि थे। "मैंने कविता में हमेशा आम आदमी के हाथों को दिखाना चाहा। मैंने हमेशा ऐसी कविता की आस की जिसमें उँगलियों की छाप दिखाई दे। मिट्टी के गारे की कविता, जिसमें पानी गुनगुना सकता हो। रोटी की कविता जहाँ हर कोई खा सकता हो।'' उनसे पूछा गया ''आप क्यों लिखना चाहते हैं?'' उनका उत्तर था ''मैं एक वाणी बनना चाहता हूँ।'' दुनिया में नेरुदा की एक पहचान 'जनवाणी के कवि' के रूप में रही है। उनके लेखन के विषयों में राजनीति से लेकर समुद्र और एक साधारण चिलीवासी से लेकर रिचर्ड निक्सन तक, सब समान सहजता और विस्मय के साथ आते हैं। नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत, कम्युनिस्ट, प्रेम का गायक और जनवाणी का कवि पाब्लो नेरुदा की रचनाएँ सुरीली घंटियों और चेतावनी के घंटों, दोनों की ध्वनियाँ सुनाती हैं। गैब्रियल गार्सिया मारक्वेज ने पाब्लो नेरुदा को ''बीसवीं सदी में किसी भी भाषा का सबसे महान कवि'' कहा था। सच कहा जाए तो पूरा लातिन अमेरिकी साहित्य आज अपने जिस जादुई यथार्थवाद के सम्मोहन से सारी दुनिया को मतवाला किये हुए है, यथार्थ जीवन के सूक्ष्मतम पर्यवेक्षण से उत्पन्न उस जादू के सभी तंतुओं को नेरुदा की कविताओं में काफी विकसित रूप में पाया जा सकता है। यह संश्लिष्ट यथार्थ की ठोस जमीन से कल्पना की अनोखी उड़ान की सर्जना का कमाल है। इसीलिए इसके अन्दर से व्यक्त हुआ आक्रोश और प्रतिवाद भी प्रेम की उत्तेजना जितना ही मर्मभेदी और मादक है।

नेरुदा की रचनाशीलता को उनके व्यक्तित्व के साथ ही निरन्तर विकासमान रूप में समझा जा सकता है। उनकी कविताओं को उनके व्यक्तित्व से जुदा करके देखना कोरी नादानी के सिवाय कुछ नहीं होगा। इसीलिए आमतौर पर यह माना जाता है कि नेरुदा की कविताओं में